मोर

THE COMMON PEAFOWL OR PEACOCK

(Pavo cristatus)

भगवान बिरसा जैविक उद्यान

चकला (ओरमाँझी), राँची

मयूर (मोर)

THE COMMON PEAFOWL OR PEACOCK

***(Pavo cristatus* Linnaeus)**

मयूर सर्वाधिक जाना-पहचाना भव्य रूपवाला फेजेन्ट है। यह भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। यह पूरे भारत में, हिमालय की 5000 फीट ऊँचाई तक तथा पड़ोसी देश श्री लंका और बांग्लादेश में सामान्य रूप से पाया जाता है। इसकी कलगी सिर के ऊपर पंखा के रूप में व्यवस्थित रहती है जिसके तार जैसे पंख के शीर्ष पर चकती जैसी संरचना रहती है। मयूर कुछ परिवर्त्तित रंग-रूपों (म्यूटैंट्स), यथा पूरा सफेद, काले कंधों वाला आदि स्वरूपों में भी पाए जाते हैं। नुकीले कलगी (शिखा) वाली एक अन्य प्रजाति का मयूर (*Pavo muticus*) म्यानमार में पाया जाता है। भारतीय कला, साहित्य, लोककथा तथा गीतों में इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

मयूर का शरीर गिद्ध के शरीर जितना ही बड़ा होता है। वयस्क मयूर (नर) का सिर, गरदन तथा छाती चमकीले नीले रंग का होता है और इसके चमकीले हरे रंग के पुछल्ले 3-4 फीट लम्बे होते हैं जिस पर भड़कदार रंग से अलंकृत नेत्रक का छाप रहता है। ये पुछल्ले वस्तुतः असामान्य रूप से लम्बे उपरी पुछल्ले होते हैं। मयूरी (मादा) सौम्य, भूरे रंग की छोटे सामान्य पुछल्ले वाली होती है और इसकी गर्दन का निचला भाग चमकीला हरा रहता है। मयूर बहुसंगगामिनी (polygamous) होते हैं तथा समतल और तराई के पर्णपाती वनों में खासकर नदी-नालों के समीप इन्हें एक नर और 4-5 मादा के झुण्डों में अक्सर देखा जाता है। नर और मादा वर्ष में कुछ समय एक-दूसरे से अलग भी रहते हैं। शर्मीले परन्तु हमेशा चौकस रहने वाले ये पक्षी सुबह-शाम जंगल के खुले भागों तथा निकटस्थ खेतों में अपना आहार चुगने के लिए निकलते हैं। इनकी विलक्षण सावधानी और

चालाकी तब दृष्टिगोचर होती है जब किसी परभक्षी द्वारा इन पर आक्रमण किया जाता है। इनकी दृष्टि तथा श्रवण शक्ति अत्यंत तीक्ष्ण होती है तथा किसी प्रकार के खतरा की आशंका होने पर ये घनी झाड़ियों के भीतर घुसकर तेजी से दोनों पैरों पर दौड़ते हुए भाग जाते हैं। यदि खतरा अचानक आ जाए तो अपने असुविधाजनक लम्बे और भारी पुछल्लों के बावजूद तेजी से सीधे उपर उड़ने में भी ये सक्षम होते हैं। ऊँचे वृक्षों पर इनका रात्रि-विश्राम होता है और सुबह होते ही पूरा जंगल इनके तेज और तीखे "मे-आव" के बाद 6-8 बार गर्दन और सिर के पंपिंग क्रिया से उत्सर्जित "का-आन" की चिल्लाहट से गूँज उठता है। देखने में शानदार इस पक्षी की कर्कश आवाज विरोधाभासी ही प्रतीत होता है। मयूर अपनी संगिनी मयूरियों के समक्ष अपने भड़कीले पुछल्लों को खड़ा और फैलाकर अपने स्पन्दन आवेग तथा कामोत्तेजना का इजहार करता है।

आमतौर पर इनका खाद्य अनाज या घास का दाना (बीज), कन्द-मूल तथा मुलायम तना है, परन्तु ये सर्वभक्षी हैं और सहजता से कीट-पतंग, छोटे साँप आदि खा लेते हैं तथा इनकी संख्या पर नियंत्रण रखते हैं। धार्मिक कारणों से इन्हें कई क्षेत्रों, यथा राजस्थान, में संरक्षण प्राप्त है पर वे वहाँ खेतों में बोए गए बीजों को काफी क्षति पहुँचाते हैं। जनवरी से अक्टूबर के बीच मादा झाड़ियों में छिपे छिछले जमीन पर घास, पत्ते और तिनका से बनाए गए घोसलों में 4-6 पीलापन लिए क्रीम रंग का अण्डा देती है तथा 28 दिनों तक सेती है जिसके बाद चूजे निकलते हैं। चूजों के बड़े होने तक माता मयूरी इन्हें अपने चोंच से दाना खिलाती है।

कुछ दशक पूर्व मयूर भारतीय परिदृश्य के सामान्य और अभिन्न अंश थे परन्तु इसके सुन्दर पंख के लिए मानवीय लोभ ने इसे विलुप्त होने के कगार पर ला दिया है। भारतीय वनजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के अन्तर्गत इसे पूर्ण संरक्षित पक्षी का दर्जा प्राप्त है तथा इसे मारने अथवा इसके अवयव का व्यापार करने के अपराध के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान है, परन्तु लोक-जागरुकता तथा सक्रियता की कमी के कारण हमारे इस राष्ट्रीय पक्षी को वास्तविक पूर्ण संरक्षण अभी तक नहीं मिल पाया है।

सामान्य सूचना

स्थापना वर्ष	1994	
कुल क्षेत्रफल	104 हेक्टेयर (जन्तु अनुभाग : 83 हे0; वनस्पति अनुभाग : 21 हे0)	
भ्रमण काल	अप्रैल, 1 से अक्टूबर, 31	पूर्वाह्न 9.00 बजे से अपराह्न 4.30 बजे तक (निकास 5.30 अप. तक)
	नवम्बर, 1 से मार्च, 31	पूर्वाह्न 9.00 बजे से अपराह्न 4.00 बजे तक (निकास 5.00 अप. तक)
प्रवेश शुल्क	वयस्क	रुपये 2/- प्रति व्यक्ति
	बच्चा (5-12 वर्ष)	रुपये 1/- प्रति बच्चा
	बच्चा (5 वर्ष से कम)	निःशुल्क
	नौका विहार (अधिकतम 4 व्यक्ति; 15 मिनट तक) रुपये 20/	
फोटोग्राफी/फिल्मिंग	मूवी कैमरा	रुपये 1000/- प्रतिदिन
	विडियो कैमरा	रुपये 200/- प्रतिदिन
	स्टील कैमरा	रुपये 5/-
वाहन पार्किंग	साईकिल	रुपये 1/-
	स्कूटर/मोटर साईकिल	रुपये 2/-
	कार/जीप/अन्य हल्के वाहन	रुपये 3/-
	बस/ट्रक/अन्य भारी वाहन	रुपये 5/-

उद्यान के भीतर निजी वाहन का प्रवेश वर्जित है।
उद्यान प्रत्येक सोमवार को बंद रहता है।

भगवान बिरसा जैविक उद्यान
चकला (ओरमाँझी), राँची

दूरभाष (उद्यान कार्यालय) : 0651-2576531

पत्राचार हेतु पता :

पोस्ट बाक्स संख्या-41, डोरण्डा जी.पी.ओ., राँची 834 002

Design to Print by CapsMicrographics Ph.2481073